भीड़ में अकेला

जो क्रूज़

Copyright © 2006, 2020
by Lu Ann Crews

All rights reserved.
Printed in India.

Published by:
Amazing Facts India
Post Box No 51
Banjara Hills, Hyderabad
Telangana, 500034

www.AmazingFactsIndia.org

भीड़ में अकेला

जो क्रूज़

भीड़ में अकेला 2

भीड़ का अनुसरण करना या
इच्छानुसार चलना 5

क्या सच का प्रचार करना आसान है? 8

“अत्यधिक माननीय" के संकट 11

इच्छानुसार चलने की भ्रांति 14

क्रिया या प्रतिक्रिया करना 17

अपराधों से निपटना 21

भीड़ में अकेला

हाल ही में मैंने एक छोटे समुद्री जीव के बारे में कुछ बहुत ही दिलचस्प बातें खोजीं जो बाइबल के पैमाने पर काफ़ी नीचे है। अशुद्ध झींगा में मोल्टिंग (केंचुली उतारना) नामक प्रक्रिया के माध्यम से एक साल में छह या आठ बार कपड़े बदलने का सबसे शानदार तरीका होता है। प्रकट रूप से एक नया सूट पुरानी त्वचा के नीचे बढ़ने लगता है। चट्टानों पर इधर-उधर खिसकने से, झींगा बहुत पुराना हो जाता है और पुरानी बाहरी परत ढीली हो जाती है, जो जल्द ही पूरी तरह से खिसक जाती है, जिससे नीचे की तरफ के उत्तम दर्जे का नया आवरण प्रकट होता है।

प्रत्येक मोल्टिंग (केंचुली उतारना) के समय, एक और आकर्षक परिघटना होती है। कुछ अंतर्निहित आदिम वृत्ति के उत्तर में, प्रत्येक झींगा जानबूझकर रेत का एक दाना अपने सिर में एक विशेष स्थान पर रखता है। प्रत्येक मोल्टिंग चक्र पर पुरानी त्वचा के साथ छोटे कंकड़ को निकाल दिया जाता है, और रेत के एक नए दाने को सावधानी से रखा जाता है।

उन कंकड़ों के अनूठे कार्य के कारण, उन्हें “अवस्था पत्थर” या आधार के पत्थर का नाम दिया गया है। वे इन दृढ़ समुद्री जानवरों के अस्तित्व के लिए बहुत आवश्यक हैं। उनके बिना झींगे लगातार भ्रमित और अस्त-व्यस्त होंगे। उमड़ते ज्वार और धाराओं के परिणामस्वरूप वे बार-बार यहाँ-वहाँ ऊपर-नीचे

होते हैं। यह केवल उसके सिर में कंकड़ पर गुरुत्वाकर्षण के मामूली खींचाव को महसूस करने के लिए है जिससे वे जान सके कि वे उल्टे है या सीधे।

अपने महान प्रेम और ज्ञान में, परमेश्वर ने नम्र झींगों को अपने निवास स्थान के अशांत तत्वों के बीच एक गरिमापूर्ण संतुलन बनाए रखने में सक्षम बनाने के लिए यह क्रियाविधि प्रदान की।

चूंकि यह स्पष्ट है कि किसी भी झींगे ने इन तथ्यों के बारे में मुझे कोई भी जानकारी नहीं दी है, आप आश्चर्यचकित हो सकते हैं कि यह आश्चर्यजनक जानकारी कैसे सामने आई। कई साल पहले एक समुद्री जीवविज्ञानी ने कई झींगों पर एक प्रयोग किया था जिन्हें एक बड़े मछलीघर में रखा गया था।मछलीघर के तल में वैज्ञानिक ने रेत के बजाय स्टील का बुरादा रखा। जब मोल्टिंग (केंचुली उतारना) का समय आया, तो प्रत्येक झींगे ने एक कंकड़ के बजाय स्टील का एक टुकड़ा उठाया, और उसे अपने सिर में रखा।

फिर जीवविज्ञानी ने एक शक्तिशाली इलेक्ट्रोमैग्नेट लाया और इसे मछलीघर के शीर्ष पर रखा। तुरंत सभी झींगे उलटे हो गए और प्रतिलोमित स्थिति में इधर-उधर तैरने लगा। स्टील के लंबे टुकड़े पर चुंबक का खिंचाव गुरुत्वाकर्षण के खिंचाव से अधिक मजबूत था, और उनका मानना था कि ऊपर नीचे था और नीचे ऊपर था। प्रयोग को अधिक नाटकीय बनाने के लिए वैज्ञानिक समुद्र से एक झींगा लाया और इसे मछलीघर में रखा।

स्वाभाविक रूप से प्रदर्शन-स्थल पर यह नवागंतुक उचित सीधी स्थिति में आसपास मंडरा रहा था।

क्या आप उस व्याकुलता की कल्पना नहीं कर सकते हैं जिसे संभवतः टैंक में इस बेमेल की उपस्थिति से उकसाया गया था? यह अत्यधिक संभाव्य है कि अशांत पानी के भीतर कुछ अप्रिय फुसफुसाहट प्रसारित होने लगी। “इस सनकी को क्या लगता है कि वह कौन है? वह किसे प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है? क्या यह निराला कल्पना कर रहा है कि वह हमें तैरने का बेहतर तरीका दिखाने जा रहा है? वह इसे उल्टा क्यों कर रहा है?”

आप देखते हैं कि सिर में स्टील का एक टुकड़ा लिए और गलत तरीके से तैर रहे झींगों को कोई आभास नहीं था कि हाल ही में आगंतुक एकमात्र झींगा था जो सही ढंग से तैर रहा था। वे हमेशा दो चीजों पर निर्भर थे, यह साबित करने के लिए कि वे सही थे - उनकी भावना, और उनके आस-पास के बहुसंख्य क्या कर रहे थे। लेकिन अब जब उनके अवस्था कंकड़ के साथ छेड़छाड़ की गई थी, तो उन्हें दोनों मामलों में झूठ पर विश्वास करने में धोखा दिया गया था।

भीड़ का अनुसरण करना या इच्छानुसार चलना

जितना मैंने उस कहानी के बारे में सोचा, उतना ही मुझे एहसास हुआ कि जैसे-जैसे हम इस दुनिया में अपना रास्ता बनाते हैं, हम सभी एक मछलीघर में हैं। प्रलोभन के शक्तिशाली चुंबक हमारे चारों ओर हमारे आध्यात्मिक संतुलन को बिगाड़ने और हमें उल्टा करने की कोशिश कर रहे हैं। जो लोग भावना और बहुमत की राय में भरोसा करते हैं, वे बाहरी ताकतों के प्रभावशाली आकर्षण से आसानी से उल्टे हो जाते हैं। अपने आस-पास वैसे ही काम करने वाले इतने सारे लोगों की उपस्थिति से संतुष्ट होकर, वे जल्द ही सब कुछ को अपने विकृत दृष्टिकोण के अनुसार देखना शुरू कर देते हैं। वे उन्हें बेहतर पढ़ने के लिए सभी संकेतों को उलट देते हैं, और एक दृढ़ विश्वास विकसित करते हैं कि वे संतुलित और सही हैं, जबकि उनसे अलग हर कोई गलत है। अंततः वे गलत को सही और सही को गलत के रूप मेंदेखते हैं। जो कोई भी उसकी धारणाओं के विपरीत जाता है, उसे तुरंत कट्टरपंथी या गंभीर उपद्रवी के रूप में नामित कर दिया जाता है।

यह एक महान सच्चाई को इंगित करता हैः बहुसंख्यक क्या कर रहे हैं या अपनी भावना से हम सही और गलत को नहीं आंक सकते हैं! यह बताने के लिए कि सच्चाई कहाँ है, हमें खुद के बाहर से कुछ चाहिए। हमारे आवेग चुंबक के आकर्षण के

समान वास्तविक हो सकते हैं, लेकिन वे समान रूप से भ्रामक भी हो सकते हैं। हमारे कई दोस्त सबसे अधिक सम्मानजनक और धार्मिक हो सकते हैं, लेकिन उनकी अवस्था कंकड़ को उसी झूठी मार्गदर्शन प्रणाली से जोड़ा जा सकता है, जो चालाकी से दुश्मन द्वारा बिगाड़ दी जाती है।

मसीहियों के लिए केवल एक सही, अचूक अवस्था पत्थर है, और वह है बाइबिल। जब उस वचन को दिमाग में रखा जाता है, तो यह सच्चाई को एक मानक प्रदान करता है जो हमेशा भरोसेमंद होता है। भावना के हर आवेग को इसके द्वारा परखा जाना चाहिए। शब्दों, कार्यों और विचारों सहित कुल जीवन शैली को उस एक महान दिशात्मक नियंत्रण केंद्र की देखरेख में लाया जाना चाहिए। यह बताने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि आज परमेश्वर की इच्छा से अधिकांश विचलन या तो भावना का पालन करने या भीड़ का अनुसरण करने पर आधारित हैं।

हमारे लिए इन दो शक्तिशाली हथियारों का अध्ययन करना कितना महत्वपूर्ण है जिसे शैतान ने इस तरह के शैतानी दक्षता के साथ उपयोग किए। ये दोनों ही मनुष्य की गहरी मनोवैज्ञानिक जरूरतों के भीतर निहित हैं। हम अक्सर इस तथ्य को नजरअंदाज कर देते हैं कि हमारा आध्यात्मिक शत्रु लगभग ६,००० वर्षों से मानव प्रकृति का अध्ययन कर रहा है - आज व्यवहार में सबसे सफल मनोचिकित्सक की तुलना में थोड़ा लंबा है। हमारे सबसे कमजोर क्षणों में हमारा शोषण करने के लिएइनका उपयोग कर, उसने हमारी भावनात्मक कमजोरियों के साथ भी प्रयोग किया है।

कितने लोग उसके षड्यंत्रात्मक उपकरणों के शिकार हुए हैं? हमारे देह-उन्मुख समाज पर एक स्पष्ट नजर उत्तर प्रदान करती है। यीशु ने ऐसा होने से बहुत पहले देखा और अपने शिष्यों और हमें उन हमलों की ताकत के बारे में चेतावनी देने की कोशिश की। उसने कहा,"किन्तु कितना सँकरा है वह द्वार और कितनी सीमित है वह राह जो जीवन की ओर जाती है। बहुत थोड़े से हैं वे लोग जो उसे पा रहे हैं" (मत्ती 7:14)।

एक अन्य अवसर पर प्रभु ने यह महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा, "जब मनुष्य का पुत्र आयेगा तो क्या वह इस धरती पर विश्वास को पायेगा? (लूका 18:8)"। उसी प्रवचन में उसने घोषणा की, "वैसे ही जैसे नूह के दिनों में हुआ था, मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा" (लूका 17:26)।

स्पष्ट रूप से पृथ्वी के निवासियों का केवल एक छोटा सा भाग अंत के दिनों के भारी छल से बच निकलेगा और बचाए जाएंगे। हमेशा की तरह, कुछ बचे हुए स्वयं को, भीड़ को, या किसी अन्य व्यक्ति को खुश करनेके बजाय सही करने के बारे में अधिक चिंतित होंगे। इतिहास का रिकॉर्ड लगातार असहमति जताने वालों की उस छोटे से दल की कहानी को लिपिबद्ध करता है जिसने भीड़ के सुखद निवेदन को अस्वीकार करने का साहस किया। ऐसा लगता है कि अधिकांश कभी भी सत्य को इतना ज्यादा नहीं ढूंढते जितना कि एक सहज, आसान, सुविधाजनक धर्म को जो उन्हें जैसा वे चाहते हैं वैसे जीने के लिए अनुमति देगा। उनके लिए कोई भी सिद्धांत जो

आत्म-निषेध या एक अनुशासित जीवन शैली की मांग करता है, बुरी खबर है।

क्या सच का प्रचार करना आसान है?

निस्संदेह यही कारण है कि आज अधिकांश कलीसियाओं में इस तरह के एकतरफा सुसमाचार का प्रचार क्यों किया जा रहा है। उन चीजों को बोलना सुखद है जिनकी सराहना की जाती है और जो अच्छी तरह से ग्रहण किया जाता है। परमेश्वर का कोई संदेशवाहक धर्मी ठहराए जाने और निःशुल्क अनुग्रह के बारे में अनमोल सच्चाइयों को घोषित करने में संकोच नहीं करता है, जिसके लिए केवल विश्वास और स्वीकृति की आवश्यकता होती है। फिर भी सुसमाचार का एक और पक्ष है जो फल और अच्छे कार्यों से संबंधित है। इसे पवित्रीकरण कहते हैं। यह जीवन की हर परिस्थिति में आज्ञाकारिता और मसीह के समान व्यवहार की बात करता है। यह विश्वास के द्वारा धार्मिकता का पहलू है जो आज जन साधारण के साथ बहुत अलोकप्रिय है। यह कार्रवाई और आज्ञाकारिता की मांग करता है।

क्या कुछ प्रचारक अस्वीकृति और उपहास के डर से इस अनलंकृत सत्य के विषय का प्रचार करने से डरते हैं? क्या विधि

सम्मत और आलोचनात्मक ठहराए गए अन्य वफादार रखवालों पर हमला होते देखकर वे भयभीत हो गए हैं? आप उस प्रश्न का उत्तर अपनी टिप्पणियों के आधार पर दे सकते हैं। भविष्यवक्ता योना का उदाहरण नाटकीय प्रमाण प्रदान करता है कि इसे इस तरह बताना आसान नहीं है। कोई भी उसके नियत कार्य का स्वागत नहीं करेगा।

क्या हर रंग और विविधता के पेशेवर पापियों के सामने खड़े होना और यीशु मसीह का अन्तिम मांग दोहराना आसान है, “जाओ और पाप नहीं करो?” परमेश्वर का एक राजदूत होने के नाते, मैं आपको बता सकता हूं कि नशा करने वालों, शराबी और वेश्याओं के लिए खेद महसूस करने और पाप के अभ्यास को छोड़ने से संबद्ध आवश्यकताओं को मंद करने के लिए एक भयानक प्रलोभन है। हम उन पर सहज होना चाहते हैं। हम उन्हें इस विचार के साथ हतोत्साहित नहीं करना चाहते हैं कि उन्हें अपनी जीवन शैली बदलनी होगी। कम से कम, तुरंत नहीं। उनके लिए धर्म को और अधिक सुखकर बनाने के लिए किसी तरह हम दैहिक स्वभाव को थोड़ा समय और समायोजित करना चाहते हैं।

प्रश्नः क्या कोई भी सच्चा धर्म है जो किसी भी तरह से पाप के निरंतर अभ्यास का समर्थन करता है? क्या पूरे बाइबल में ऐसा कोई कथन है जो इस विचार को व्यक्त करता है कि हमें केवल हमारे द्वारा किए गए पाप की मात्रा को कम करना चाहिए? क्या मसीह का धर्मी ठहराने वाला और परिवर्तित करने वाला अनुग्रह किसी भी सुविचारित, ज्ञात पाप के अभ्यास को

ढांक सकती है? पौलुस कहता है, “क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ” गलातियों 5:17।

यदि यह कथन इस विषय पर पर्याप्त मजबूत नहीं है, तो रोमियों 8:13 में प्रेषित के आगे के शब्द को पढ़ें, “क्योंकि यदि तुम भौतिक शरीर के अनुसार जिओगे तो मरोगे। किन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर के व्यवहारों का अंत कर दोगे तो तुम जी जाओगे”। वो रहा! हम इनमें से एक कर सकते हैं, लेकिन हम एक ही समय में दोनों नहीं कर सकते। हम या तो शरीर के अनुसार जीते हैं या आत्मा के अनुसार। पौलुस कहता है, “ये एक दूसरे के विपरीत हैं।” वह स्पष्ट है। इन दोनों ताकतों के बीच अधिकार का बंटवारा नहीं हो सकता। हमें शरीर के कर्मों का दमन करना होगा या उन्हें समायोजित करना होगा। यह कौन सा होगा? यह दोनों नहीं हो सकते। लेकिन भीड़ का अनुसरण करने के बारे में अपनी बात पर लौटते हैं। हमने पाया है कि बहुधा बहुसंख्य गलत होते है, और वे नहीं चाहते कि उनके पापों के बारे में बताया जाए। हमने यह भी माना है कि उस भीड़ को बताना कितना मुश्किल है कि वे कितनी गलत हैं। यहीं यीशु के शब्दों को पढ़ना उचित प्रतीत होता है, “तुम वो हो जो लोगों को यह जताना चाहते हो कि तुम बहुत अच्छे हो किन्तु परमेश्वर तुम्हारे मनों को जानता है। लोग जिसे बहुत मूल्यवान समझते हैं, परमेश्वर के लिए वह तुच्छ है” (लूका 16:15)।

"अत्यधिक माननीय" के संकट

अंतिम वाक्य में आज हम सभी के लिए एक अनमोल सिद्धांत है। यीशु ने इसके बारे में फरीसियों से बात की जो बेशर्मी से अपने अन्यायपूर्ण तरीकों को सही ठहरा रहे थे क्योंकि वे उस समय के स्वीकार्य विधि-संहिता के अनुरूप थे। उसने स्पष्ट रूप से संकेत दिया कि बहुमत की राय लगभग हर प्रश्न के गलत पक्ष पर होगी। उसने पहले ही घोषित कर दिया था कि अधिकांश लोग विनाश की चैड़ाी सड़क में प्रवेश करेंगे। उनके विचार और व्यवहार उन लोगों का प्रतिनिधित्व करेंगे जो गलत हैं - जो खो जाएंगे। फिर भी यह संकरी सड़क में "कुछ" के विपरीत सबसे बड़ी संख्या द्वारा ग्रहण किया जाएगा। चौंकाने वाली बात यह है कि अधिकांश लोगों के बीच "अत्यधिक माननीय" चीजें परमेश्वर की दृष्टि में घृणित हैं।

इस कथन की सच्चाई को देखना कठिन नहीं है जब हम उन सिद्धांतों को देखते हैं जिन पर समाज आज काम करता है। चाहे हम पोशाक, आहार, मनोरंजन या शैक्षिक मानकों को देख रहे हों, दुनिया के तरीकों और परमेश्वर के आदर्शों में बहुत अंतर है।कभी-कभी हम इस्राएलियों की तरह झुँझलाते हैं, क्योंकि हम अपने आस-पास के राष्ट्रों की तरह नहीं हो सकते, लेकिन परमेश्वर ने हमें जीने के लिए एक बेहतर, उच्चतर मानक दिया है।

कई लोगों ने बाइबिल में शुरू से अंत तक अलगाव के द्वारा उजागर पवित्रता के लगभग तपस्वी सिद्धांत पर अचंभा

किया है । परमेश्वर ने अपने प्राचीन लोगों को विधर्मी राष्ट्रों के साथ घुलने मिलने और विवाह करने से क्यों मना किया? नए नियम के लेखक आध्यात्मिक इजराइल को एक ऐसी प्रणाली से जिसे वे “जगत” कहते हैं अलग होने और “बाहर आने” के लिए बार-बार आह्वान करते हैं। जिन्हें बुलाया जाता है, उन्हें “कलीसिया” के रूप में पहचाना जाता है, जो हमेशा “दुनिया के प्रतिकूलता में” स्थापित होती है। कलिसिया के लिए मूल शब्द दो ग्रीक शब्दों से आया हैः क जिसका अर्थ है “से बाहर” और कालेओ, जिसका अर्थ है “बुलाया” - एक्लेसियाः कलिसिया, बुलाए हुए।

परमेश्वर अपने “थोड़े से” अनुयायियों को चौड़ी सड़क के "बहुसंख्य" के साथ अंतरंग संबंध की स्वीकृति क्यों नहीं देता है? और बहुसंख्य नष्ट हो जाने का विकल्प क्यों चुनते हैं? शैतान अपने कार्यक्रम का पालन करने के लिए ऐसे अधिक संख्या में जनसमूह को कैसे खींचता है? उन सवालों के जवाब भविष्यद्वक्ताओं और सुसमाचार लेखकों के बहुसंख्य से अलगाव के लिए आग्रह के विषय में एक स्पष्टीकरण प्रदान करेंगे।

यहाँ है वह कारण कि दुष्ट के द्वारा इतने को अधिकृत कर लिया गया हैः उसकी भ्रातृत्व योजना मन के एक मान्यताप्राप्त कानून पर आधारित है जो यह निर्णय लेता है कि हम धीरे-धीरे उन लोगों के अनुकूल हो जाते हैं जिनके साथ हम संगत रखते हैं। उनके शब्दों और जीवनशैली को सुनने और देखने का अचेतन प्रभाव धीरे-धीरे उस चीज की स्वीकृति की ओर बढ़ता है, जो एक समय में घृणास्पद थी। इस तरह के प्रदर्शन का

संचन प्रभाव नैतिक रिजर्व को तोड़ देता है, और अंततः पाप के प्रति एक मैत्रीपूर्ण रवैये की ओर ले जाता है।

पूरी योजना घातक है क्योंकि खमीर की प्रक्रिया इतनी सूक्ष्मता से होती है। किसी भी बिंदु पर सहयोगी को इस बात की जानकारी नहीं है कि उसके आसपास के लोगों द्वारा अतिसूक्ष्म रूप से काम निकाला जा रहा है। कोई खतरे के संकेत नहीं उठाए जाते हैं। अंतरात्मा धीरे-धीरे नई सहिष्णु मानसिकता की ओर झुकती है। इस तरह आध्यात्मिक "स्थिति पत्थरों" को बदल दिया गया है। परिवर्तन की क्रमिक प्रकृति के कारण बाइबल के सिद्धांत से बहुसंख्यक राय की दिशा में धीमा बदलाव आम तौर पर न्यूनतम आध्यात्मिक संघर्ष के साथ हो जाता है।

सर्वेक्षण के बाद सर्वेक्षण से पता चला है कि पर्यावरणीय निवेश के घातक प्रभाव के तहत नैतिक मानकों को कैसे कम किया गया है। अपवित्र के साथ निकटता करते हुए पवित्र होने का कोई रास्ता नहीं है। हम परिणाम भुगतने के बिना मन को लगातार अशुद्ध या घृणित वस्तु के लिए अनावृत नहीं कर सकते। परमेश्वर की आत्मा ने दैहिक दुनिया से अलग होने का आग्रह करने में कोई गलती नहीं की। यहां तक कि प्रार्थना और बाइबल अध्ययन भी भ्रष्ट करने वाले शब्दों और ध्वनियों को सुनने और मनोहर पापी दृश्यों को देखने के धृष्ट विकल्प के विरुद्ध रक्षा करना जारी नहीं रख सकता है।

इच्छानुसार चलने की भ्रांति

निश्चित रूप से हम अब बेहतर समझ सकते हैं कि हमारे लिए झींगे का पाठ समझना क्यों महत्वपूर्ण है। भीड़ का पीछा करना कभी भी सुरक्षित नहीं होता है। लेकिन अब एक दोषपूर्ण स्थिति पत्थर के दूसरे खतरनाक परिणाम पर नजर डालते हैं। झींगाभावनाओं में भरोसा करता था जो कि स्थिति के पत्थर पर काम करने वाले शक्तिशाली बाहरी बलों द्वारा उत्पादित किए गए थे। स्पष्ट रूप से ये भावनाएं गलत और अविश्वसनीय थीं क्योंकि इसके सिर में पत्थर को बदल दिया गया था।

इसे अच्छी तरह से चिह्नित करेंः भावना का पालन करना उतना ही अधिक असुरक्षित है जितना कि भीड़ का अनुसरण करना। भले ही झींगा उस चुंबक के बारे में कितना सुरक्षित महसूस करता था, उसने उसे गलत तरीके से काम करने और खुद को मूर्ख बनाने के लिए प्रेरित किया। शैतान को हममें से हर एक से वही काम करवाने में खुशी होगी। उसने बहुसंख्य से परमेश्वर के वचन के बजाय कोई अन्य “आधार के पत्थर” पर भरोसा करवाकर, पहले से ही उनके साथ ऐसा किया है। एक ग्लैमरस, शानदार समाज के शक्तिशाली चुंबक का उपयोग करते हुए, शैतान ने कुछ बहुत ही सुखद लेकिन भ्रामक भावनाओं का निर्माण किया है। लाखों लोगों को झूठी सुरक्षा की अवस्था के लिए उकसाया गया है, जिसमें वे हास्यास्पद रूप से अति आत्मविश्वासी और सुरक्षित महसूस करते हैं। यह लगभग वैसा ही है जैसे उन्हें सम्मोहित कर लिया गया हो और

वे स्वयं की इच्छा के बजाय किसी और मन की इच्छा का पालन कर रहे हों। क्या अधिकांश सर्वसाधरण लोग वास्तव में शैतान की सम्मोहक शक्तियों द्वारा लाई गई अवचेतन स्थिति के तहत काम करते हैं? कोई भी मनोवैज्ञानिकों की किसी में भी, जो उन्हें देखेगा या उन्हें सुनेगा, ऐसी स्थिति उत्पन्न करने की क्षमता पर संदेह नहीं कर सकता है। किसी व्यक्ति को सम्मोहन के तहत रखने में हमेशा एक सम्पर्क बिन्दु होता है जिसका उपयोग किया जाता है। ध्यान एक प्रकाश या किसी अन्य वस्तु के साथ-साथ उन शब्दों पर केंद्रित होना चाहिए जो बोले जा रहे हैं। इस सुविचारित ध्यान के बिना किसी को सम्मोहित करने वाले की शक्ति के तहत नहीं लाया जा सकता है।

क्या किसी को अपने नियंत्रण में लाने के लिए शैतान को ऐसाध्यान पाना पड़ता है? वह भी संपर्क के बिंदु का उपयोग करता है, आमतौर पर लिप्त कमजोरी, दैहिक आकर्षण या प्रलोभन के कुछ अन्य क्षेत्र। हमारी एकमात्र सुरक्षा यही है कि हम कभी भी खुद को उसके ध्यान आकर्षित करने वाले उपकरण को देखने या सुनने की अनुमति नहीं दे। जब भावनाएँ सत्य का परीक्षण करने का मानदंड बन जाती हैं, तो अनुचित रूप से रक्षात्मक रवैया उत्पन्न होता है। सबसे ईमानदार लोग सभी सवालों से परे आश्वस्त हो जाते हैं कि वे सही हैं और बाकी सभी पूरी तरह से गलत हैं। अपनी व्यक्तिपरक भावना के विश्वासयुक्त आश्वासन में वे स्वयं से परे वस्तुगत सत्य पर आधारित सभी तर्क या कारण का विरोध करते हैं।

क्या एक मसीही के लिए ऐसी भावना या मनोदशा खतरनाक हो सकती है? वास्तव में, शैतान तर्कसंगत रूप से कार्य करने की क्षमता को नष्ट करने के लिए उनका उपयोग करता है। मान लीजिए कि आप एक छोटे कमरे में बिना किसी वायु-संचार के बैठे हैं। एक तेल से जलने वाला स्टोव पिछले कुछ समय से ऑक्सीजन का उपभोग कर रहा है।धीरे-धीरे आप इतने सुस्त हो जाते हैं कि आपका दिमाग मुश्किल से ही सोच पाता है। आपको अपनी कुर्सी से हिलने का मन नहीं होता है। विशेष रूप से, आपको खिड़की या दरवाजा खोलने के लिए उठने का मन नहीं करता है। फिर भी हिलने के विरुद्ध आपकी भावना एक खतरे का संकेत है कि आपको कमरे में अधिक ऑक्सीजन प्राप्त करने के लिए तुरंत खुद कार्रवाई करना चाहिए या आप फिर से कभी नहीं हिलेंगे।

क्या आप कभी प्रार्थना नहीं करने, या अपनी बाइबल न पढ़ने की मनःस्थिति में रहे हैं? बेशक आप रहे हैं। मैं भी रहा हूं। तो क्या मुझे उस भावना के प्रति समर्पण करना चाहिए? सुनो, प्रार्थना आत्मा की सांस है जैसे ऑक्सीजन शरीर की सांस है। प्रार्थना और अध्ययन न करने की हमारी मनःस्थिति एक संकेत है कि हम बेहतर तरीके से जल्दी प्रार्थना करना और बाइबल पढ़ना जल्दी शुरू कर क्योंकि हमारे आध्यात्मिक जीवन को खतरा हो रहा है। यही समय है कि हम अपने आप को कोठरी में बंद कर लें, अपने घुटनों पर आ जाएँ, और जैसे ही हम प्रार्थना करते हैं, आध्यात्मिक इच्छाएँ वापस लौटने लगती हैं। बहुत जल्द प्रार्थना को एक आनंदपूर्ण संतोषप्रद विशेषाधिकार

के रूप में बहाल हो जाती है। लेकिन जब तक हम शैतान के संपर्क बिंदु के विरुद्ध कार्रवाई करके उसके “भावना” जाल को नहीं तोड़ते, तब तक हम महान आध्यात्मिक खतरे में हैं। सच तो यह है कि हमें कार्रवाई करनी चाहिए या हमें स्वयं पर कार्रवाई होने देनी चाहिए।

क्रिया या प्रतिक्रिया करना

यह हमें शानदार अहसास दिलाता है कि हम में से हर एक या तो क्रिया या प्रतिक्रिया करने पर आधारित जीवन जी रहे हैं। हम जिस तरह का जीवन जीएंगे उसके बारे में हम स्वयं स्वतंत्र निर्णय लेते हैं या फिर हम दूसरे लोगों द्वारा हमारे साथ व्यवहार करने के तरीके पर प्रतिक्रिया करते हैं। बाद के मामले में हम अपने जीवन की दिशा को किसी और की ओर मोड़ देते हैं और उन्हें यह निर्धारित करने की अनुमति देते हैं कि हम किस तरह के व्यक्ति होंगे। कृपया ध्यान दें कि हम अभी भी शैतान के द्वारा हमारी भावनाओं के परिचालन के बारे में बात कर रहे हैं लेकिन इस मामले में वह किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से काम कर रहा है ताकि उसका नियंत्रण हो सके। यह संभावना है कि कोई भी दूसरों के कार्यों से कुछ हद तक प्रभावित होने से परे है, लेकिन अधिकांश वास्तव में उन परिस्थितियों के मोहरे हैं जो उनके आसपास विकसित होती हैं।

सबसे महत्वपूर्ण फैसलों के लिए विचारात्मक तर्क या प्रार्थना को आधार बनाने के बजाय, जिस तरह से उनकी भावनाओं को दूसरों के द्वारा उभारा गया है, उसके आधार पर वे आवेग में किसी भी या सभी दिशाओं में शुरू हो जाते हैं।

डॉक्टर हंटर एक अंग्रेजी हृदय शल्य चिकित्सक थे जो खुद कोरोनरी (चक्रीय) बीमारी से पीड़ित था। एक दिन उसने एक सहकर्मी से टिप्पणी की, "मेरा जीवन किसी भी बदमाश के हाथों में है जो मुझे परेशान करना चाहता है।" उसकी आत्म-भविष्यवाणी सच साबित हुई। बाद में कोई उसके साथ इस तरह से पेश आया जिससे वह उग्र हो गया, और वह दिल का दौरा पड़ने से मर गया। क्या मिसाल है कि शिक्षा और उच्च बुद्धि हमारी गिरती हुई मानवीय प्रकृति की मूर्खता से हमारी रक्षा नहीं कर सकती है! सीखने की उनकी सभी सम्मानजनक डिग्री डॉक्टर हंटर को अपनी आत्मा पर नियंत्रण नहीं दिया। उसने सचमुच एक और व्यक्ति को निर्णय लेने की अनुमति दी कि क्या वह जीवित रहेगा या मर जाएगा।

लेकिन डॉक्टर की गलती उन लोगों की तुलना में कम है, जो दूसरों को वास्तव में अपने अनन्त भाग्य का निर्धारण करने की अनुमति देते हैं। हर दिन हमारे चारों ओर हम एक अनावश्यक नाटक भयानक प्रदर्शन देखते हैं, और अक्सर चर्च के सदस्य इसमें शामिल होते हैं।जिस तरह से उनके साथ व्यवहार किया जाता है उसके प्रतिशोध में लोग अपनी अस्थिर भावनाओं को नियंत्रण से बाहर निकलने की अनुमति देते हैं, और कुछ सबसे गहरे पाप स्वर्ग की किताबों में उनके खिलाफ दर्ज हैं। कई लोग

अपनी अन्तरात्मा खो देंगे क्योंकि वे अपने स्वयं की क्रियाविधि के लिए जिम्मेदारी संभालने से इनकार करते हैं। वास्तव में, वे बिल्कुल भी कार्य नहीं करते हैं वे केवल प्रतिक्रिया करते हैं। हम बिना किसी संदेह के कह सकते हैं कि जो लोग अनुशासित, नियंत्रित जीवन जीने के लिए ईश्वरीय शक्ति पकड़ कर नहीं रखते हैं, वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शैतान द्वारा शासित होंगे। एक भी व्यक्ति के पास उस तरह की ताकत नहीं है।

मित्रों और शत्रुओं दोनों के हर उकसावे का प्रतिरोध करके अपने स्वयं के जीवन को नियंत्रित करने की क्षमता उनके भीतर परमेश्वर के अनुग्रह से आनी चाहिए। प्रतिक्रिया देने से सुरक्षा का वास्तविक रहस्य पौलुस के द्वारा फिलिप्पियों को दी गई सम्मति में पाया जाताहै, “जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो” (फिलिप्पियों 2:5)। यदि वह यीशु के विचारों को सोच रहा है तो कोई भी पलट कर हमला नहीं कर सकता। क्रूस पर मसीह ने प्रतिशोध, जलन या प्रतिशोध का कोई संकेत नहीं दिया। उनकी प्रार्थना थी, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहें हैं”। क्या वह मनःस्थिति शरीरिक मनुष्य में सुलभ है? वास्तव में, यीशु के पास वही पतित मानव प्रकृति थी जो सभी बच्चों को अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त करते हैं। फिर भी उसने कभी भी एक भी उकसाने, प्रतिघात या अपमान के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। जिस तरह की शांति उसने प्रदर्शित की उसका परमेश्वर के हर विश्वास करने वाले बच्चे के लिये वादा किया गया है जो विश्वास में यह दावा करेगा।

पौलुस 2 कुरिन्थियों 10:5 में घोषित करता है, “सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।”

कोई यह नहीं माने कि मसीह के विचारों और दिमाग के साथ इस तरह का एकीकरण संघर्ष और समर्पण दोनों के बिना आ सकता है। चरित्र पवित्र आत्मा के साथ संयोजन में काम करने वाली दो चीजों द्वारा ईश्वरीय परिपाटी के अनुरूप हो जाताहै-मनुष्य की इच्छा और मनुष्य के कार्य। परमेश्वर हमारे लिए ये दो काम कभी नहीं करेगा। प्रत्येक व्यक्ति को पाप से मुड़ने का निर्णय लेना चाहिए, और फिर उसे पाप के विरुद्ध कार्य करना शुरू करना चाहिए। इन कदमों में से कोई भी प्रभावी नहीं होगा यदि आत्मा को सक्षम बनाने वाली शक्ति उनके साथ नहीं है। किसी भी व्यक्ति के पास उससे किए गए व्यवहार के तरीके के प्रति गुस्से की प्रतिक्रिया को रोकने की शक्ति नहीं है, लेकिन उसके पास प्रतिक्रिया देना बंद करने के लिए चुनने की शक्ति है। वह प्रतिक्रिया करने के लिए आवेग का विरोध करना शुरू करने की क्षमता भी रखता है। क्या वे दो कदम जीत लाते हैं? वास्तव में, जब कदम वादा किए गए उद्धार का दावा करने के बाद लिया जाता है, तो वे सच्चे विश्वास के प्रभावशाली प्रमाण प्रदान करते हैं। और विश्वास, बदले में, परमेश्वर के सर्वशक्तिमान हाथ को किसी भी पाप के अभ्यास के विरुद्ध हस्तक्षेप करने के लिए विध्वंसकारक बल के साथ आगे बढ़ाता है।

अपराधों से निपटना

विश्वास के साथ-साथ उन लोगों के प्रति तालमेल की एक धारणा को विकसित करना भी बहुत महत्वपूर्ण है जो अपकार कर रहा प्रतीत होते हैं। अधिकांश समस्या यह विचार करने की अनिच्छा या असमर्थता से उपजी है कि वह व्यक्ति इस तरह से क्यों काम कर रहा है। यह एक प्रदर्शित तथ्य है कि अपराधी के प्रति हमारा अपना दृष्टिकोण काफी हद तक निर्धारित करता है कि उसके हमारे विरुद्ध किए के प्रति हम क्या प्रतिक्रिया करते हैं। दुर्भाग्य से जब कोई शारीरिक या मौखिक हमले के तहत होता है, विचारशील और बुद्धि सम्पन्न होने के लिए बहुत कम झुकाव होता है। आवेगपूर्ण क्रोध नियंत्रण कर लेता है, और हम आत्म-सुरक्षा में आँख बंद करके प्रहार करते हैं। अगर हम उन अति संवेदनशील भावनाओं के ऊपर रहने में सक्षम होते हैं, तो हमें दूसरे व्यक्ति के उद्देश्यों के बारे में कुछ सवाल पूछने और जवाब देने का समय मिलेगा। तर्कसंगत विचार के कुछ क्षण भी इस संभावना का सुझाव दे सकते हैं कि अपराधी गलत सूचनाओं के तहत काम कर सकता है और वह जो कर रहा है उसमें बहुत ईमानदार हो सकता है।यह निश्चित रूप से उसके प्रति हमारी अपनी प्रतिक्रियाओं को सुधार सकता है।

वर्षों पहले मैंने एक कहानी सुनी जो मेरे लिए एक ऐसी प्रेरणा रही है जिसे मैंने अपनी सेवकाई में अक्सर साझा किया है। कई बार, विशेष रूप से व्यक्तिगत तनाव के कठिन समय के

दौरान सहज महसूस करने के लिए, मुझे खुद को फिर से कहानी बताने की आवश्यकता पड़ी है। यह फिलिप नाम के एक पुराने यूनानी दार्शनिक के बारे में है जो एक दिन एक दोस्त के साथ सड़क पर घूम रहा था। ऐसा हुआ कि फिलिप का एक दुश्मन एक ऊपरी खिड़की से उसे समीप आकर देख रहा था। जैसे ही दोनों पास से गुजरे उसने बुद्धिमान बूढ़े आदमी पर पानी की एक बाल्टी फेंक दी। इस कुकृत्य के लिए मामूली प्रतिक्रिया के बिना, फिलिप ने अपनी बातचीत जारी रखी जैसे कि कुछ भी नहीं हुआ था। उसका दोस्त रुक गया और उस व्यक्ति को खोजने में मदद करने और उसको दंडित करने की पेशकश की जिसने उसके साथ बहुत अशिष्ट व्यवहार किया था। फिलिप ने चुपचाप जवाब दिया कि किसी ने भी उसके साथ गलत नहीं किया। दोस्त ने विस्मय में कहा, “लेकिन उस आदमी ने आप पर पानी फेंका। आप पूरी तरह से भीग गए हैं। “नहीं,” दार्शनिक ने जवाब दिया, “आप गलत समझ रहे हैं।” उसने मुझ पर कोई पानी नहीं फेंका। उसने उस आदमी पर फेंक दिया जिसे उसने सोचा था कि मैं था।”

क्या मनोभाव है! और कितना फर्क पड़ता अगर हर किसी में दूसरों की भावनाओं के प्रति नि:स्वार्थ सम्मान की भावना होती। यदि सभी लोग फिलिप की धारणा का अभ्यास करेंगे, तो अधिकांश व्यक्तिगत अलगाव, नस्लीय समस्याएँ और अंतर्राष्ट्रीय विवाद एक क्षण में सुलझाए जा सकते हैं। कुछ समय पहले मैं एक युवा माँ को बपतिस्मा के लिए तैयार कर रहा था। जब मैंने चर्च के सिद्धांतों की अंतिम समीक्षा के लिए

उससे मुलाकात की, तो वह अचानक रो पड़ीं। “मैं बपतिस्मा नहीं ले सकती,” वह रोई। “कल रात मेरी माँ ने मुझसे मुलाकात की और मुझे याद दिलाया कि चूंकि मैं अपने भाई से नफरत करती हूँ इसलिए बपतिस्मा लेना सही नहीं होगा।” मेरे कोमल उकसाव के तहत, कैरोल ने पहली बार साझा करने के लिए सहमति व्यक्त की कि वह उन सभी वर्षों में अपने इकलौते भाई से क्यों नफरत करती थी। उस दुःखद आत्मा के पीछे के कारणों को उसकी माँ भी नहीं जानती थी। जब वह सात साल की थी, तो उसका किशोर भाई उसका यौन शोषण करने लगा और कभी भी किसी को बताने पर उसे गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देने लगा। आठ साल तक उसे उस क्रूर भाई के हाथों अकल्पनीय दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा।

मैं सही मायने में कैरोल के कटु गुस्से और उसके भाई के प्रति नफरत को समझ सकता था। मैं उसके अमानवीय और पागल बनाने के तर्कसंगत अनुभव से अभिभूत था। मैं कैसे कुछ भी कह सकता हूं जो उन गहरी मनोवैज्ञानिक दर्द और आघात पर उसकी भावनाओं को बदल सकता था? फिर मुझे पुराने यूनानी दार्शनिक की कहानी याद आ गई। उसके साथ इसे साझा करने के बाद, मैंने उस तिरस्कृत भाई के बारे में और जानकारी माँगी। क्या वह कभी मसीही था? “नहीं,” कैरोल ने कहा, “वह एक मसीही के विपरीत था। वह हमेशा शैतानों के नियंत्रण में रहता था, और वह अब भी उसी तरह है।”

मैंने कहा, “कैरोल, क्या यह एक त्रासदी नहीं है कि आपके भाई को अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह की शक्ति का कभी

पता नहीं चला?" वह जो भी कर रहा था, उसमें वह शैतान द्वारा नियंत्रित किया गया था। उसके जीवन में परमेश्वर के बिना उसके पास कोई मौका नहीं था कि वह उन चीजों का विरोध कर सके जो शैतान उसके माध्यम से कर रहा था। उसे शैतान द्वारा बहकाया और उपयोग किया गया था। यदि केवल वह प्रभु यीशु को जानता होता, तो वह कभी भी ऐसा नहीं होता। उसने आपके साथ प्रेमपूर्ण और आदरपूर्ण व्यवहार किया होता। अब आप मुझे बता रहे हैं कि वह अभी भी मसीही नहीं है। उसे अभी भी बुरे काम करने के लिए विवश किया जा रहा है और उसके पास प्रतिरोध करने की कोई शक्ति नहीं है। अगर वह यीशु के बारे में सीख सकता है और उसे स्वीकार कर सकता है तो इससे कितना फर्क पड़ता। उसे वही आनंद होगा जो आपने मसीह में पाया है। कैरल, हमें उसके लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है, कि किसी तरह वह इस बुरी शक्ति से बाहर निकल सके जो उसका उपयोग कर रही है।"

जैसे मैं बात कर रहा था आँसू फिर से बहने लगे, लेकिन इस बार वे एक खोए हुए भाई के लिए दुःख और करुणा के आँसू थे, जो कि घृणा के बजाय दया का पात्र अधिक था। कैरोल उस दिन अपने घुटनों पर गई, और उसने अपने भाई को शैतान की शक्ति के निंदनीय दासत्व से बचाने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। उसकी अपनी व्यक्तिगत घृणा उन आँसुओं में बह गई थी, और अगले दिन मुझे पानी की कब्र में दफन पुराने कैरोल को देखने का आनंद मिला। उसका जीवन उस समय रूपांतरित हो गया जब उसे एहसास होने लगा कि उसका भाई

उसे जानता भी नहीं था- वास्तव में नहीं। यदि वह एक व्यक्ति के रूप में उसके प्रति संवेदनशील होता, तो वह उसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करता। उसकी समझ पाप से विकृत हो गई थी। क्या हम उन लोगों के बारे में ऐसा ही विश्वास कर सकते हैं जो जीवन की राह पर हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं? यदि वे पूरी तरह से समझ जाते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, क्या वे उसी तरह से कार्य करते? क्या हम यह नहीं मान सकते कि उन्हें वास्तव में हमारे बारे में, हमारी भावनाओं के बारे में, और हम वास्तव में कौन हैं, की पूरी जानकारी नहीं है? यदि केवल हम उन्हें उस संदेह का लाभ दे सकते और कह सकते, “उन्होंने वास्तविक मेरे साथ ऐसा नहीं किया। उन्होंने उस व्यक्ति के लिए किया जिसे उन्होंने सोचा था कि मैं था।” तब हम उनके लिए खेद महसूस कर सकते हैं, क्योंकि वे इससे बेहतर नहीं जानते हैं। और सबसे अच्छी बात यह है कि हम उनके लिए प्रार्थना भी करना शुरू कर सकते हैं।

तो हम फिर से झींगे, जिनके सिर में कंकड़ हैं, द्वारा सिखाई गई दो महान शिक्षाओं पर लाए जाते हैं। हम अपनी व्यक्तिपरक भावनाओं द्वारा या बहुसंख्य क्या कर रहे हैं उसके द्वारा यह नहीं माप सकते कि क्या सही है और क्या गलत है। हमारी स्थिरता का पत्थर परमेश्वर का वचन होना चाहिए। भीड़ के बावजूद, हमारे मूड या भावनाओं की परवाह किए बिना, जिस तरह से लोग हमारे साथ व्यवहार करते हैं, उसकी परवाह किए बिना, हमें ईश्वरीय सिद्धांत के आधार पर अपने जीवन को व्यवस्थित करना चुनना चाहिए। पौलुस की तरह हम कहते हैं,

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैः और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।" (गलातियों 2ः20)।

AMAZING FACTS
India

हमारी मुफ़्त बाइबिल अध्ययन
पाठ्यक्रम को ना चूकें।
BibleStudy.AFTV.in
पर आज ही नामांकन करें!

AMAZING FACTS India

परमेश्वर का संदेश हमारा मिशन है

BOOKSTORE.AFTV.IN

पर जाएं जहां आप कई भाषाओं में मसीही सामग्री की खरीद कर सकते हैं और उन्हें आपके द्वार तक पहुंचाया जा सकता है!

अधिक मुफ़्त डिजिटल पुस्तकें खोजें

AFTV.in/Free-Book-Library

हिन्दी, तमिल, तेलगु, कई भाषाओं में उपलब्ध है ...

Post Box No. 51 • Banjara Hills
Hyderabad, TS 500034

www.AmazingFactsIndia.org